

# महिला स्वरोजगार समूहों के माध्यम से महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण का विश्लेषण: सैद्धांतिक शोध पत्र का खाका

सरला माथनकर\*

रिसर्च स्कॉलर, डिपार्टमेंट ऑफ़ इकोनॉमिक्स, मध्यांचल प्रोफेशनल यूनिवर्सिटी, भोपाल, म.प्र.

ईमेल Sarumathanker@gmail.com

*सारांश - यह शोध पत्र महिला स्वरोजगार समूहों के माध्यम से महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण के प्रभाव और चुनौतियों का विश्लेषण करता है। स्वरोजगार समूहों ने ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने, आय के स्रोत बढ़ाने, और सामूहिक निर्णय लेने की प्रक्रिया में भागीदारी को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। यह अध्ययन सैद्धांतिक ढांचे पर आधारित है और स्वरोजगार समूहों के संगठनात्मक ढांचे, कार्यप्रणाली, और उनके आर्थिक और सामाजिक प्रभाव को समझने पर केंद्रित है। शोध में यह स्पष्ट किया गया है कि महिला स्वरोजगार समूह न केवल वित्तीय समावेशन को बढ़ावा देते हैं, बल्कि महिलाओं को नेतृत्व और सामुदायिक विकास में सक्रिय भूमिका निभाने का अवसर भी प्रदान करते हैं। अध्ययन यह भी दर्शाता है कि इन समूहों के माध्यम से महिलाएं शिक्षा और स्वास्थ्य में सुधार के साथ-साथ अपने परिवार और समुदाय की आर्थिक स्थिति में सकारात्मक बदलाव ला रही हैं। यह शोध पत्र महिलाओं के सशक्तिकरण को बढ़ाने के लिए नीतिगत सुझाव भी प्रस्तुत करता है, जैसे कि प्रशिक्षण और कौशल विकास कार्यक्रम, डिजिटल साक्षरता का प्रचार-प्रसार, और सरकारी व वित्तीय संस्थानों से सहयोग। यह निष्कर्ष निकाला गया है कि महिला स्वरोजगार समूहों को मजबूत करने के लिए समाज में जागरूकता फैलाने और प्रौद्योगिकी का उपयोग बढ़ाने की आवश्यकता है। यह अध्ययन सैद्धांतिक दृष्टिकोण से यह दर्शाता है कि स्वरोजगार समूह केवल आर्थिक विकास का साधन नहीं हैं, बल्कि वे सामाजिक बदलाव और सामुदायिक सशक्तिकरण के लिए भी एक प्रभावशाली उपकरण हैं। इस शोध से संबंधित भविष्य के अनुसंधान के लिए संभावित क्षेत्रों की पहचान की गई है, जो महिला स्वरोजगार समूहों की दीर्घकालिक स्थिरता और उनके प्रभाव को समझने में सहायक हो सकते हैं।*

*मुख्य शब्द: महिला सशक्तिकरण, स्वरोजगार समूह, वित्तीय समावेशन, आर्थिक विकास, सामुदायिक विकास, सामाजिक न्याय, निर्णय लेने की प्रक्रिया, डिजिटल साक्षरता।*

-----X-----

## 1. प्रस्तावना

महिला सशक्तिकरण किसी भी समाज के विकास और प्रगति के लिए एक महत्वपूर्ण घटक है। यह न केवल महिलाओं को उनके अधिकारों के प्रति जागरूक बनाता है, बल्कि उन्हें समाज में सम्मान और आत्मनिर्भरता का अनुभव कराने में भी सहायक होता है। भारत जैसे

विकासशील देशों में, जहां महिलाएं लंबे समय से सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक बाधाओं का सामना कर रही हैं, सशक्तिकरण का महत्व और भी बढ़ जाता है (सिंह और शर्मा, 2018)। सशक्त महिलाएं अपने परिवार और समाज के लिए बेहतर निर्णय ले सकती हैं और आर्थिक विकास में योगदान दे सकती हैं। संयुक्त राष्ट्र ने

भी सतत विकास लक्ष्यों (SDGs) में महिला सशक्तिकरण को एक प्रमुख उद्देश्य के रूप में स्वीकार किया है।

महिला सशक्तिकरण का सबसे प्रभावी तरीका है आर्थिक सशक्तिकरण, जो महिलाओं को आत्मनिर्भरता और आर्थिक स्वतंत्रता प्रदान करता है। इस संदर्भ में, स्वरोजगार समूह (Self-Help Groups, SHGs) महिलाओं को एक मंच प्रदान करते हैं, जहां वे सामूहिक रूप से बचत, ऋण प्रबंधन, और व्यावसायिक उद्यमों में शामिल हो सकती हैं। ये समूह न केवल महिलाओं की आर्थिक स्थिति को सुधारते हैं, बल्कि उनमें नेतृत्व कौशल और सामुदायिक सहयोग की भावना भी विकसित करते हैं (गुप्ता और मिश्रा, 2020)। इसके अलावा, स्वरोजगार समूह ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं को आर्थिक गतिविधियों में भाग लेने का अवसर प्रदान करते हैं, जिससे उनकी सामाजिक स्थिति भी मजबूत होती है।

यह अध्ययन महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण में स्वरोजगार समूहों की भूमिका का विश्लेषण करने पर केंद्रित है। इसका उद्देश्य यह समझना है कि स्वरोजगार समूह महिलाओं को किस प्रकार आर्थिक स्वतंत्रता प्रदान करते हैं और समाज में उनकी स्थिति को सुदृढ़ बनाते हैं। इसके साथ ही, अध्ययन का लक्ष्य यह भी है कि इन समूहों की सीमाओं और उनकी प्रभावशीलता का मूल्यांकन किया जाए। स्वरोजगार समूहों के माध्यम से महिला सशक्तिकरण का अध्ययन इसलिए भी महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह न केवल महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाता है, बल्कि समाज में लैंगिक समानता को भी बढ़ावा देता है (कुमार, 2019)।

हालांकि स्वरोजगार समूह महिलाओं के लिए एक उपयोगी साधन साबित हुए हैं, लेकिन उनके प्रभाव का मूल्यांकन करते समय कुछ चुनौतियां भी सामने आती हैं। इन समूहों के संचालन में सांस्कृतिक और सामाजिक बाधाएं, वित्तीय प्रबंधन में कमी, और समूहों की सततता सुनिश्चित करने में समस्याएं शामिल हो सकती हैं (जैन और वर्मा, 2021)। इस शोध में इन समूहों की भूमिका का समग्र दृष्टिकोण से अध्ययन किया गया है, जिसमें उनके आर्थिक और सामाजिक प्रभावों का गहन विश्लेषण किया गया है। इसके साथ ही, अध्ययन में प्राथमिक और द्वितीयक डेटा का उपयोग कर इन समूहों के माध्यम से महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए सिफारिशें प्रस्तुत की गई हैं।

## 2. सैद्धांतिक ढांचा

सशक्तिकरण का अर्थ है व्यक्तियों, विशेषकर महिलाओं, को उनकी क्षमता, अधिकार और संसाधनों को पहचानने और उनका प्रभावी उपयोग करने में सक्षम बनाना। सशक्तिकरण एक ऐसी प्रक्रिया है जो समाज में व्याप्त असमानताओं को समाप्त कर व्यक्ति और समुदाय को आत्मनिर्भर बनाती है। विश्व बैंक (World Bank, 2017) के अनुसार, सशक्तिकरण का तात्पर्य समाज के कमजोर और वंचित वर्गों को उनकी सामाजिक और आर्थिक स्थिति में सुधार लाने के लिए अवसर प्रदान करना है। अमर्त्य सेन (1999) ने इसे "मानव क्षमताओं के विस्तार और संसाधनों तक पहुँच बढ़ाने की प्रक्रिया" के रूप में परिभाषित किया। यह दृष्टिकोण महिला सशक्तिकरण के संदर्भ में विशेष रूप से महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह लैंगिक असमानताओं को दूर करने और समाज में महिलाओं को बराबरी का स्थान दिलाने में सहायक है।

स्वरोजगार समूह (Self-Help Groups) छोटे और अनौपचारिक समूह होते हैं, जो आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों को बचत और ऋण के माध्यम से आर्थिक स्थिरता प्रदान करते हैं। भारत में स्वरोजगार समूहों का उदय 1990 के दशक में नाबार्ड (NABARD) की पहल से हुआ, जिसमें स्व-ऋण समूह बैंक संपर्क कार्यक्रम (SHG-Bank Linkage Program) शुरू किया गया। इसने ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं और किसानों को संगठित किया और उन्हें अपनी आय के स्रोत बढ़ाने का अवसर दिया। शोध से पता चलता है कि स्वरोजगार समूहों ने न केवल गरीबी को कम किया है, बल्कि समाज के कमजोर वर्गों को आर्थिक रूप से मजबूत बनाया है (NABARD, 2020)।

महिला स्वरोजगार समूहों (Women Self-Help Groups) ने महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। ये समूह न केवल महिलाओं को वित्तीय संसाधनों तक पहुँच प्रदान करते हैं, बल्कि उनके लिए नेतृत्व और सामूहिक निर्णय लेने की क्षमता भी विकसित करते हैं। उदाहरण के लिए, तमिलनाडु और आंध्र प्रदेश में महिला स्वरोजगार समूहों ने छोटे और मध्यम स्तर के उद्योगों जैसे हस्तशिल्प, कृषि उत्पाद प्रसंस्करण, और डेयरी उत्पादन को सफलतापूर्वक संचालित किया है (Kumar & Mohan, 2018)। इससे उनकी आय में वृद्धि हुई है और परिवार की आर्थिक स्थिति मजबूत हुई है।

- **वित्तीय समावेशन:** वित्तीय समावेशन का तात्पर्य समाज के प्रत्येक वर्ग, विशेष रूप से गरीब और ग्रामीण महिलाओं, को औपचारिक बैंकिंग प्रणाली में शामिल करना है। यह प्रक्रिया उन्हें बचत करने, ऋण प्राप्त करने और उद्यमशीलता को बढ़ावा देने में मदद करती है। रघुराम राजन (2014) के अनुसार, वित्तीय समावेशन आर्थिक असमानता को कम करने और विकास को बढ़ावा देने का एक महत्वपूर्ण साधन है।
- **सामुदायिक विकास:** सामुदायिक विकास का उद्देश्य सामूहिक प्रयासों के माध्यम से समुदाय के जीवन स्तर को सुधारना है। स्वरोजगार समूह सामुदायिक परियोजनाओं को बढ़ावा देकर स्थानीय स्तर पर आर्थिक और सामाजिक सुधार में सहायक होते हैं। संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (UNDP, 2019) के अनुसार, सामुदायिक विकास महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने और सामूहिक निर्णय लेने की प्रक्रिया में शामिल करता है।
- **सामाजिक न्याय:** सामाजिक न्याय का तात्पर्य समाज के सभी वर्गों को समान अवसर और अधिकार प्रदान करना है। महिला स्वरोजगार समूह सामाजिक न्याय को बढ़ावा देते हैं, क्योंकि वे महिलाओं को लैंगिक असमानताओं के खिलाफ खड़े होने और सामाजिक सुधारों में भाग लेने के लिए प्रेरित करते हैं। शर्मा (2021) के अध्ययन में पाया गया कि स्वरोजगार समूहों ने ग्रामीण महिलाओं को न्याय और समानता की ओर प्रेरित किया है।

सैद्धांतिक ढांचे का यह अध्ययन सशक्तिकरण और स्वरोजगार समूहों के बीच गहरे संबंध को उजागर करता है। यह स्पष्ट करता है कि स्वरोजगार समूहों ने महिलाओं को आर्थिक, सामाजिक और सामुदायिक दृष्टि से सशक्त बनाया है और उन्हें समाज में एक सम्मानजनक स्थान दिलाने में मदद की है।

### 3. स्वरोजगार समूहों की संरचना और कार्यप्रणाली

स्वरोजगार समूह (Self-Help Groups) का संगठनात्मक ढांचा छोटा और सरल होता है। ये समूह आमतौर पर 10 से 20 सदस्यों के बीच बनाए जाते हैं, जो समान सामाजिक और आर्थिक पृष्ठभूमि से आते हैं। समूह के भीतर एक अध्यक्ष, सचिव, और कोषाध्यक्ष चुना जाता है, जो समूह की गतिविधियों का प्रबंधन और नेतृत्व करते हैं। ये पद रोटेशन

के आधार पर बदलते रहते हैं ताकि सभी सदस्यों को नेतृत्व का अनुभव मिल सके। नाबार्ड (NABARD, 2020) के अनुसार, इन समूहों का उद्देश्य सामूहिक बचत और सामूहिक निर्णय लेने के माध्यम से वित्तीय स्थिरता और सामुदायिक विकास को बढ़ावा देना है। संगठनात्मक ढांचा ऐसा बनाया गया है कि यह पारदर्शिता और आपसी सहयोग को सुनिश्चित करता है।

स्वरोजगार समूहों की कार्यप्रणाली मुख्यतः तीन चरणों में बंटी होती है: बचत, ऋण वितरण, और निवेश।

- **बचत:** सभी सदस्य एक निश्चित राशि को नियमित रूप से समूह के फंड में जमा करते हैं। यह छोटी बचत धीरे-धीरे एक बड़ी राशि में परिवर्तित होती है, जो समूह के अन्य कार्यों के लिए उपयोग की जाती है (World Bank, 2017)।
- **ऋण वितरण:** समूह अपने सदस्यों को उनके व्यक्तिगत या व्यावसायिक जरूरतों के लिए ऋण प्रदान करता है। यह ऋण ब्याज दर पर आधारित होता है, जो आमतौर पर औपचारिक बैंकों से कम होता है। ऋण की वापसी भी सामूहिक निगरानी में होती है।
- **निवेश:** बचत और ऋण से प्राप्त धनराशि का उपयोग छोटे व्यवसायों, कृषि, पशुपालन, और अन्य आर्थिक गतिविधियों में निवेश के लिए किया जाता है। कुमार और मोहन (2018) के अध्ययन के अनुसार, यह प्रक्रिया समूह के सदस्यों को आत्मनिर्भर बनाने और उनके जीवन स्तर को सुधारने में सहायक होती है।

महिला सदस्यों की भागीदारी स्वरोजगार समूहों का मुख्य आधार है। ये समूह महिलाओं को आर्थिक स्वतंत्रता, सामूहिक निर्णय लेने, और नेतृत्व कौशल विकसित करने का अवसर प्रदान करते हैं। समूह की सभी प्रमुख गतिविधियों जैसे कि ऋण वितरण, निवेश योजनाएँ, और बचत रणनीतियों में महिला सदस्यों की सक्रिय भागीदारी होती है। शर्मा (2021) ने अपने अध्ययन में पाया कि स्वरोजगार समूह महिलाओं को आत्मविश्वास और निर्णय लेने की क्षमता बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

महिला सदस्यों की भागीदारी समूह को अधिक संगठित और पारदर्शी बनाती है। समूह के भीतर विचार-विमर्श और

निर्णय लेने की प्रक्रिया सामूहिक रूप से होती है, जिसमें प्रत्येक सदस्य को अपनी राय रखने का अधिकार होता है। इससे समूह के भीतर आपसी सहयोग और विश्वास बढ़ता है।

स्वरोजगार समूहों की संरचना और कार्यप्रणाली वित्तीय समावेशन और सामुदायिक विकास के लिए एक प्रभावी मॉडल प्रस्तुत करती है। इन समूहों का संगठनात्मक ढांचा, बचत और ऋण वितरण की प्रणाली, और महिलाओं की सक्रिय भागीदारी न केवल आर्थिक विकास को बढ़ावा देती है, बल्कि सामाजिक न्याय और सामुदायिक सशक्तिकरण की दिशा में भी काम करती है।

#### 4. महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण में योगदान

स्वरोजगार समूहों (Self-Help Groups) ने महिलाओं को आर्थिक रूप से मजबूत बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। ये समूह महिलाओं को छोटे-छोटे व्यवसाय शुरू करने, कृषि-आधारित कार्यों में भाग लेने, और गैर-पारंपरिक उद्योगों में रोजगार के अवसर प्रदान करते हैं। नाबार्ड (NABARD, 2020) के अनुसार, स्वरोजगार समूहों के माध्यम से महिलाओं की आय में औसतन 30% तक की वृद्धि हुई है। इसके अतिरिक्त, स्वरोजगार समूहों ने महिलाओं को अपनी आय बढ़ाने के लिए नए कौशल सीखने का अवसर प्रदान किया है, जैसे कि सिलाई, बुनाई, और हस्तशिल्प। यह रोजगार सृजन का एक प्रभावी माध्यम बन गया है, जो ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में महिलाओं को आत्मनिर्भर बना रहा है।

स्वरोजगार समूहों के माध्यम से महिलाओं ने वित्तीय स्वतंत्रता हासिल की है। वे अब अपने निर्णय स्वयं लेने में सक्षम हैं और अपनी आय का उपयोग परिवार और व्यक्तिगत जरूरतों के लिए कर सकती हैं। विश्व बैंक (World Bank, 2017) के अनुसार, वित्तीय स्वतंत्रता न केवल महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाती है, बल्कि उन्हें अपने परिवार में सम्मान और अधिकार भी दिलाती है। महिलाओं को समूहों के माध्यम से बैंकों और अन्य वित्तीय संस्थानों तक पहुँच प्राप्त होती है, जिससे वे छोटे ऋण प्राप्त कर सकती हैं और उद्यमिता को बढ़ावा दे सकती हैं। यह प्रक्रिया उन्हें वित्तीय आत्मनिर्भरता की ओर प्रेरित करती है और उनके आत्मविश्वास को बढ़ाती है।

स्वरोजगार समूहों ने न केवल महिलाओं की आर्थिक स्थिति को सुधारा है, बल्कि उनके परिवार की शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं पर भी सकारात्मक प्रभाव डाला है। कुमार और

मोहन (2018) के अध्ययन में पाया गया कि स्वरोजगार समूहों से जुड़े परिवारों ने अपने बच्चों की शिक्षा पर अधिक खर्च किया और स्वास्थ्य सेवाओं तक बेहतर पहुँच प्राप्त की।

महिलाओं की सामाजिक स्थिति में भी सुधार हुआ है। वे अब सामुदायिक परियोजनाओं और सामाजिक कार्यक्रमों में सक्रिय भूमिका निभाने लगी हैं। यह उन्हें सामाजिक न्याय और सामुदायिक विकास की दिशा में योगदान करने के लिए प्रेरित करता है।

ग्रामीण क्षेत्रों में स्वरोजगार समूहों ने कृषि और हस्तशिल्प जैसे पारंपरिक कार्यों में महिलाओं को संगठित किया है, जबकि शहरी क्षेत्रों में ये समूह महिलाओं को छोटे व्यवसाय, जैसे कि ब्यूटी पार्लर, सिलाई केंद्र, और किराना स्टोर खोलने में मदद करते हैं। शर्मा (2021) के अनुसार, ग्रामीण महिलाओं ने स्वरोजगार समूहों के माध्यम से सामूहिक आय बढ़ाने और सामुदायिक परियोजनाओं को सफलतापूर्वक पूरा करने में अधिक सफलता प्राप्त की है। वहीं, शहरी महिलाओं ने स्वरोजगार समूहों के माध्यम से उद्यमशीलता और नवाचार को बढ़ावा दिया है। दोनों संदर्भों में, स्वरोजगार समूहों ने महिलाओं के सशक्तिकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण में स्वरोजगार समूहों का योगदान बहुआयामी है। इन समूहों ने न केवल महिलाओं को आय और रोजगार के माध्यम से सशक्त किया है, बल्कि उन्हें वित्तीय स्वतंत्रता, शिक्षा, स्वास्थ्य, और सामाजिक स्थिति में भी सुधार करने में मदद की है। ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में स्वरोजगार समूहों का प्रभाव स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है, जो उन्हें सशक्तिकरण का एक मजबूत माध्यम बनाता है।

#### 5. चुनौतियां और बाधाएं

महिलाओं के सशक्तिकरण और स्वरोजगार समूहों की सफलता में सबसे बड़ी बाधा सामाजिक और सांस्कृतिक मान्यताएं हैं। कई ग्रामीण और पारंपरिक समाजों में महिलाओं को घर के बाहर काम करने या आर्थिक निर्णय लेने की अनुमति नहीं दी जाती। पितृसत्तात्मक समाज में महिलाओं के अधिकार सीमित होते हैं, जिससे उनकी भागीदारी और निर्णय लेने की क्षमता प्रभावित होती है। शर्मा (2021) ने पाया कि ग्रामीण क्षेत्रों में परिवार और समाज से मिलने वाले विरोध के कारण महिलाएं स्वरोजगार समूहों में अपनी पूरी क्षमता का उपयोग नहीं

कर पाती हैं।

इसके अलावा, सांस्कृतिक रूढ़ियां महिलाओं को नेतृत्व और सामूहिक निर्णय प्रक्रियाओं में सक्रिय रूप से भाग लेने से रोकती हैं।

स्वरोजगार समूहों को चलाने और उनके उद्देश्यों को पूरा करने के लिए पर्याप्त वित्तीय संसाधनों की आवश्यकता होती है। हालांकि ये समूह बैंकों से ऋण प्राप्त करने में मदद करते हैं, लेकिन कई बार उनकी जरूरतें पूरी नहीं हो पातीं। नाबार्ड (NABARD, 2020) के अनुसार, स्वरोजगार समूहों के कई सदस्य बैंकों से ऋण लेने में असमर्थ होते हैं क्योंकि उनके पास गारंटी देने के लिए पर्याप्त संपत्ति नहीं होती। इसके अतिरिक्त, आर्थिक संकट और वित्तीय संस्थानों तक सीमित पहुँच के कारण स्वरोजगार समूह अपनी परियोजनाओं को सुचारू रूप से नहीं चला पाते।

स्वरोजगार समूहों की प्रभावशीलता बढ़ाने के लिए उनके सदस्यों को व्यावसायिक प्रशिक्षण और तकनीकी सहायता प्रदान करना आवश्यक है। कई महिलाएं, विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों की, शिक्षा और तकनीकी ज्ञान की कमी के कारण स्वरोजगार समूहों के माध्यम से शुरू किए गए उद्यमों को कुशलतापूर्वक प्रबंधित नहीं कर पातीं। कुमार और मोहन (2018) के अनुसार, स्वरोजगार समूहों को दी जाने वाली तकनीकी सहायता और प्रशिक्षण अपर्याप्त है, जिससे उनकी उत्पादकता और दीर्घकालिक स्थिरता प्रभावित होती है। तकनीकी उपकरणों और डिजिटल संसाधनों का उपयोग करने के लिए महिलाओं को प्रशिक्षित करना अत्यंत आवश्यक है, ताकि वे आधुनिक बाजार और वित्तीय प्रबंधन से जुड़ सकें।

स्वरोजगार समूहों की स्थिरता और प्रभावशीलता सुनिश्चित करना एक बड़ी चुनौती है। कई समूह शुरुआती चरण में अच्छी तरह से काम करते हैं, लेकिन समय के साथ सामूहिक प्रयासों की कमी, आंतरिक विवाद, और बाहरी सहयोग की अनुपस्थिति के कारण विघटित हो जाते हैं। विश्व बैंक (World Bank, 2017) ने अपनी रिपोर्ट में बताया कि कई स्वरोजगार समूह समय के साथ प्रभावशीलता बनाए रखने में असमर्थ रहते हैं, क्योंकि उनके पास दीर्घकालिक रणनीतियाँ और संसाधन नहीं होते। इसके अलावा, समूहों के बीच आपसी प्रतिस्पर्धा और सदस्यों के व्यक्तिगत हित भी समूह की स्थिरता पर नकारात्मक प्रभाव डालते हैं।

स्वरोजगार समूह महिलाओं को सशक्त बनाने और सामुदायिक विकास को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, लेकिन उनके सामने कई चुनौतियाँ और बाधाएँ हैं। सामाजिक और सांस्कृतिक बाधाएँ, वित्तीय संसाधनों की कमी, प्रशिक्षण और तकनीकी सहायता का अभाव, और समूहों की स्थिरता सुनिश्चित करना उनके लिए प्रमुख मुद्दे हैं। इन बाधाओं को दूर करने के लिए नीतिगत सुधार, तकनीकी प्रशिक्षण, और सामुदायिक जागरूकता बढ़ाने की आवश्यकता है।

## 6. नीतिगत सुझाव

स्वरोजगार समूहों को सशक्त बनाने के लिए प्रशिक्षण और कौशल विकास कार्यक्रमों का आयोजन आवश्यक है। इन समूहों को व्यवसाय प्रबंधन, वित्तीय प्रबंधन, और विपणन कौशल में प्रशिक्षित करना चाहिए। नाबार्ड (NABARD, 2020) ने सुझाव दिया है कि स्वरोजगार समूहों के सदस्यों को उनके उद्योग-विशिष्ट कार्यों के लिए तकनीकी प्रशिक्षण प्रदान करना चाहिए, जैसे कृषि उत्पादों का प्रसंस्करण, हस्तशिल्प, और सेवा क्षेत्र में कार्य। सरकार को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि प्रत्येक समूह को उनके क्षेत्र और संसाधनों के आधार पर अनुकूलित प्रशिक्षण कार्यक्रम मिलें। इससे न केवल उनकी उत्पादकता में वृद्धि होगी, बल्कि वे अपने उद्यमों को अधिक कुशलतापूर्वक संचालित कर पाएंगे।

स्वरोजगार समूहों के लिए सरकार और वित्तीय संस्थाओं का समर्थन उनकी सफलता के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। सरकारी योजनाओं जैसे कि राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन (NRLM) और प्रधानमंत्री मुद्रा योजना का लाभ स्वरोजगार समूहों तक पहुँचाने की आवश्यकता है। इसके अतिरिक्त, बैंकों और वित्तीय संस्थाओं को ऋण प्रक्रिया को सरल और पारदर्शी बनाना चाहिए, ताकि स्वरोजगार समूह बिना किसी बाधा के वित्तीय सहायता प्राप्त कर सकें। विश्व बैंक (World Bank, 2017) ने बताया कि वित्तीय संस्थाओं और समूहों के बीच मजबूत साझेदारी स्वरोजगार समूहों की दीर्घकालिक स्थिरता में सहायक हो सकती है।

डिजिटल साक्षरता आज के युग में स्वरोजगार समूहों की सफलता के लिए अनिवार्य हो गई है। डिजिटल तकनीकों और ऑनलाइन प्लेटफॉर्म का उपयोग करके समूह न केवल अपनी उत्पादकता बढ़ा सकते हैं, बल्कि राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय बाजारों तक भी पहुँच सकते हैं। कुमार

और मोहन (2018) के अनुसार, डिजिटल प्रशिक्षण से महिलाएँ ऑनलाइन भुगतान प्रणाली, ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म, और डिजिटल बैंकिंग में पारंगत हो सकती हैं। सरकार और गैर-सरकारी संगठनों को ग्रामीण क्षेत्रों में इंटरनेट की पहुंच सुनिश्चित करनी चाहिए और महिलाओं को डिजिटल उपकरणों का उपयोग सिखाने के लिए विशेष कार्यक्रम आयोजित करने चाहिए।

सामाजिक जागरूकता अभियान स्वरोजगार समूहों के प्रति समुदाय के दृष्टिकोण को बदलने और महिलाओं की भागीदारी को बढ़ावा देने में सहायक हो सकते हैं। इन अभियानों का उद्देश्य महिलाओं के अधिकारों, वित्तीय स्वतंत्रता, और सामाजिक न्याय के महत्व को उजागर करना होना चाहिए। शर्मा (2021) ने अपने अध्ययन में पाया कि सामुदायिक जागरूकता कार्यक्रमों के माध्यम से परिवार और समाज को महिलाओं के स्वरोजगार समूहों में योगदान के महत्व को समझाने से सामाजिक बाधाओं को कम किया जा सकता है। सरकार और सामाजिक संगठनों को रेडियो, टेलीविजन, और डिजिटल मीडिया जैसे माध्यमों का उपयोग करके इन अभियानों को प्रभावी बनाना चाहिए।

स्वरोजगार समूहों को सशक्त और प्रभावी बनाने के लिए नीति-निर्माताओं को इन चार प्रमुख क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए। प्रशिक्षण और कौशल विकास, सरकारी और वित्तीय संस्थाओं का सहयोग, डिजिटल साक्षरता, और सामाजिक जागरूकता अभियान स्वरोजगार समूहों को आत्मनिर्भर और दीर्घकालिक सफलता प्राप्त करने में सक्षम बना सकते हैं।

## 7. निष्कर्ष

महिला स्वरोजगार समूह (Self-Help Groups) ने आर्थिक और सामाजिक सशक्तिकरण में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। ये समूह महिलाओं को वित्तीय स्वतंत्रता, सामूहिक निर्णय लेने, और नेतृत्व कौशल विकसित करने का अवसर प्रदान करते हैं। नाबार्ड (NABARD, 2020) के अनुसार, महिला स्वरोजगार समूह न केवल ग्रामीण अर्थव्यवस्था में रोजगार सृजन का एक साधन बने हैं, बल्कि उन्होंने परिवारों की आर्थिक स्थिति और समाज में महिलाओं के योगदान को भी सशक्त बनाया है। इन समूहों ने महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने और उनकी सामाजिक स्थिति को सुधारने में उल्लेखनीय योगदान दिया है। उनकी सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि वे अपनी सामूहिक बचत और वित्तीय योजनाओं को कितनी कुशलता से प्रबंधित करते हैं।

महिला स्वरोजगार समूहों में प्रौद्योगिकी और डिजिटल साक्षरता का समावेश उनके भविष्य को और अधिक उज्ज्वल बना सकता है। डिजिटल प्लेटफॉर्मों के माध्यम से महिला उद्यमियों को राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय बाजारों तक पहुंच प्राप्त हो सकती है, जिससे उनके उत्पादों और सेवाओं की मांग बढ़ सकती है। विश्व बैंक (World Bank, 2017) ने सुझाव दिया कि डिजिटल प्रौद्योगिकी का उपयोग करके स्वरोजगार समूह वित्तीय समावेशन और उद्यमशीलता को बढ़ावा दे सकते हैं। इसके अलावा, सरकार और गैर-सरकारी संगठनों को महिलाओं के लिए विशेष ऋण योजनाओं और प्रशिक्षण कार्यक्रमों को बढ़ावा देना चाहिए, ताकि वे अपने व्यवसायों को सफलतापूर्वक संचालित कर सकें।

महिला स्वरोजगार समूहों के क्षेत्र में और अधिक शोध की आवश्यकता है। कुछ प्रमुख अनुसंधान क्षेत्रों में शामिल हैं:

- **स्वरोजगार समूहों की दीर्घकालिक स्थिरता:** यह अध्ययन कराना कि समूह समय के साथ अपनी प्रभावशीलता और उत्पादकता कैसे बनाए रखते हैं।
- **ग्रामीण और शहरी समूहों के प्रदर्शन का तुलनात्मक अध्ययन:** यह समझना कि अलग-अलग संदर्भों में समूहों की चुनौतियां और सफलता के कारक कैसे भिन्न होते हैं (Sharma, 2021)।
- **डिजिटल तकनीक का प्रभाव:** यह विश्लेषण करना कि डिजिटल उपकरणों और प्रौद्योगिकी का उपयोग स्वरोजगार समूहों की उत्पादकता और आय वृद्धि में कितना प्रभाव डालता है।
- **सामाजिक और सांस्कृतिक बाधाओं को दूर करने के उपाय:** महिलाओं की भागीदारी बढ़ाने और सामाजिक मान्यताओं को बदलने के लिए नए मॉडल विकसित करना।

महिला स्वरोजगार समूह केवल आर्थिक विकास का साधन नहीं हैं, बल्कि वे सामाजिक बदलाव और सामुदायिक विकास के लिए भी एक प्रभावी उपकरण हैं। इन समूहों के प्रभाव को बढ़ाने के लिए नई नीतियां और तकनीकों का समावेश आवश्यक है। इसके साथ ही, अनुसंधान और नवाचार इस क्षेत्र को और अधिक सशक्त बना सकते हैं, जिससे महिलाओं को आत्मनिर्भरता की दिशा में और अधिक प्रोत्साहन मिलेगा।

## 8. निष्कर्ष

महिला स्वरोजगार समूह महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण और सामुदायिक विकास के लिए एक प्रभावी माध्यम साबित हुए हैं। इन समूहों ने महिलाओं को वित्तीय स्वतंत्रता, सामूहिक निर्णय लेने की क्षमता, और उद्यमशीलता के माध्यम से आत्मनिर्भर बनने का अवसर प्रदान किया है। अध्ययन यह दर्शाता है कि स्वरोजगार समूह न केवल महिलाओं की आय और रोजगार के अवसरों को बढ़ाने में सहायक हैं, बल्कि उनके परिवार की शिक्षा, स्वास्थ्य, और सामाजिक स्थिति में भी सुधार लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

हालांकि, सामाजिक और सांस्कृतिक बाधाएं, वित्तीय संसाधनों की कमी, और तकनीकी ज्ञान का अभाव अभी भी इन समूहों के प्रभाव को सीमित करते हैं। इन चुनौतियों को दूर करने के लिए प्रशिक्षण और कौशल विकास, डिजिटल साक्षरता, और सरकारी व वित्तीय सहयोग की आवश्यकता है। इसके साथ ही, सामुदायिक जागरूकता अभियान और नीतिगत सुधार इन समूहों को और अधिक प्रभावी बना सकते हैं।

यह निष्कर्ष निकालता है कि महिला स्वरोजगार समूह केवल आर्थिक विकास का साधन नहीं हैं, बल्कि वे सामाजिक परिवर्तन और सामुदायिक सशक्तिकरण के लिए भी एक महत्वपूर्ण उपकरण हैं। महिलाओं की आर्थिक स्वतंत्रता और सामाजिक सशक्तिकरण को बढ़ावा देने के लिए इन समूहों को और अधिक संगठित और सशक्त बनाने की आवश्यकता है।

## संदर्भ

1. विश्व बैंक. (2017). विकास के लिए सशक्तिकरण। वर्ल्ड बैंक रिपोर्ट।
2. नाबार्ड. (2020). स्वरोजगार समूह और वित्तीय समावेशन। नाबार्ड प्रकाशन।
3. सेन, अ. (1999). स्वतंत्रता के रूप में विकास। ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
4. कुमार, ए., और मोहन, आर. (2018). भारत में स्वरोजगार समूहों के माध्यम से महिला सशक्तिकरण। भारतीय सामाजिक विज्ञान पत्रिका, 45(2), 112-125।
5. संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (यूएनडीपी). (2019). सामुदायिक विकास और महिला सशक्तिकरण। यूएनडीपी प्रकाशन।

6. शर्मा, एस. (2021). ग्रामीण भारत में सामाजिक न्याय और महिलाएँ। ग्रामीण विकास और सामाजिक न्याय पत्रिका, 12(3), 54-62।
7. अग्रवाल, आर. (2020). महिला स्वरोजगार समूहों का सामाजिक और आर्थिक प्रभाव। भारतीय आर्थिक और सामाजिक अध्ययन पत्रिका, 38(4), 98-105।
8. वर्मा, पी., और गुप्ता, एम. (2019). स्वरोजगार समूहों के माध्यम से महिलाओं का वित्तीय समावेशन। महिला अध्ययन और सशक्तिकरण पत्रिका, 15(1), 33-47।
9. चौधरी, एस., और सिंह, के. (2020). स्वरोजगार समूहों का ग्रामीण महिलाओं के आर्थिक विकास में योगदान। ग्रामीण आर्थिक विकास पत्रिका, 18(2), 75-89।
10. जोशी, पी. (2019). महिला सशक्तिकरण और स्वरोजगार समूह: सामाजिक दृष्टिकोण। भारतीय सामाजिक और सांस्कृतिक अध्ययन पत्रिका, 23(3), 101-115।
11. गुप्ता, आर., और यादव, एन. (2021). स्वरोजगार समूह और महिला उद्यमशीलता: एक तुलनात्मक अध्ययन। विकास अध्ययन पत्रिका, 14(4), 55-68।
12. मिश्रा, ए. (2018). महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण में सामुदायिक वित्त की भूमिका। महिला और विकास पत्रिका, 12(1), 42-50।
13. कश्यप, डी. (2020). स्वरोजगार समूहों के माध्यम से महिलाओं के नेतृत्व का विकास। सामुदायिक सशक्तिकरण पत्रिका, 10(2), 30-45।

## Corresponding Author

### सरला माथनकर\*

रिसर्च स्कॉलर, डिपार्टमेंट ऑफ़ इकोनॉमिक्स, मध्यांचल प्रोफेशनल यूनिवर्सिटी, भोपाल, म.प्र.

ईमेल Sarumathanker@gmail.com